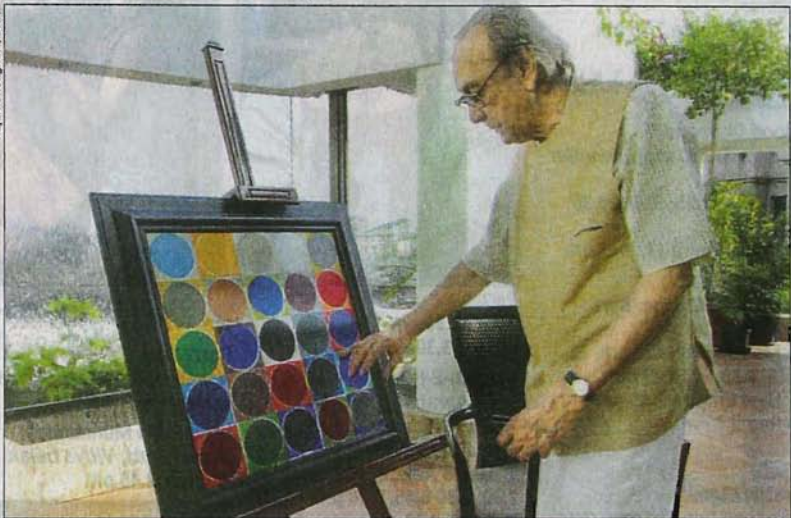


I've had my share of **struggle**

Dismissing his critics, the Paris-based artist says he wants to be true to his beliefs

Rajian Choughule/DNA



Nisha Kundani

FRANCE may have been home to Syed Haider Raza since the 1950s, but the student of Ecole Nationale des Beaux-Arts in Paris hasn't lost his Indian spirit. "I learnt the technique of painting in Paris, but I could never let go of the love I have for the tradition of my country," says Raza, whose paintings now sell for millions at auctions.

Like most geniuses though, this artist too hasn't been spared of criticism — his focus on pure geometrical forms being the prime target. "People

can say all sorts of things, but I want to be true to my belief. In my work I show variations and to do a variety of variations, one needs to concentrate to come up with renovation," he reasons.

The reclusive artist quotes Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore to explain more about the way he works. "I seek the inner light. Painting isn't just a call of the instincts. As Gandhi once said, 'You must go further than wisdom and seek the inner light and see things from the third eye'."

The artist is impressed with the talent in the

country. "Indian contemporary art has already becoming popular. Nobody can stop artists like Tyeb Mehta, Amrita Shergill, Ram Kumar, Seema Gurrayya and Manish Pushkale from touching the sky," he believes.

As for himself, his growing popularity hasn't changed his perspective towards life. "I can't be pretentious and feel that I've arrived. I've had my share of struggle and pain. I feel I've done my best and will continue to bring out the best from within," he concludes.

k_nisha@dnaindia.net

Nostalgia walk



[SH Raza and Harsh Goenka]



[Brian Brown, AN Roy and Ahmad Javed]



[Sangeeta Chopra]



[Vickram Sethi]



[Lalita Lajmi and Farzana Contractor]

THE AFFAIR

A retrospective of SH Raza.

d.d.v.

Monday, February 5, ICIA, Kalaghoda.

THE LIST

SH Raza, Vickram Sethi, Harsh Goenka, Brian Brown, Geetu Hinduja, Bose Krishnamachari, AN Roy, Ahmad Javed, Lalita Lajmi and Farzana Contractor.

THE JUICE

● **THERE** were very few people who actually came to see Raza's works. All that people did was surround the master as they waited to greet him. Even Harsh Goenka patiently waited to talk to him as Raza gave away soundbytes.

● **ARTIST** Bose Krishnamachari browsed around galleries with invitation cards in his hands. He gave away cards for his upcoming show and talked about Raza's work.

● **CURATOR** and gallery owner Vickram Sethi mingled with Harsh Goenka and AN Roy. Brian Brown chatted away with Raza and even introduced his wife to him. "I am quite famous amongst women," Raza laughed away as he shook hands with the lady.



तन पेरिस और मन मंडला में

■ नगर में आज

कार्यशाला

सुबह 9.30 बजे- प्रशामन अकादमी में प्वापलन विभाग द्वारा बर्ड फ्लर बीमारी विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला।

संगोष्ठी

सुबह 11 बजे- ईश्वर गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में भारत में आदिवासी विकास विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।

बैठक

दोपहर 2 बजे- भाजपा के प्रदेश कार्यालय, 116, एम्पी नगर में प्रदेश चुनाव समिति की बैठक।

समारोह

दोपहर 3 बजे- माध्यमिक शिक्षा मंडल परिसर में सच के पदाधिकारियों का शपथग्रहण समारोह।

शाम 5 बजे- अशासनीय विकास उ. मा. विद्यालय, बख्सेड़ा, भेल का वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह।

अभियान

शाम 4.30 बजे- मंगलवार चौरहे पर भाजपमी चौक मंडल द्वारा अफजल की फांसी को मांग को लेकर हस्ताक्षर अभियान।



■ सैयद हैदर रजा सोमवार को भारत भवन पहुंचे और यहां की मिट्टी को माथे से लगा कर भावुक हो गए। अपनी शिष्याओं के साथ उन्होंने यहां के विभिन्न स्थान देखे और अपने संस्मरण सुनाए। -भास्कर

यामिनी रमणलीवार, भोपाल

'मैं उस प्रदेश का आदिवासी हूं, जहां नर्मदा बहती है', जिस देश में गंगा बहती है की तर्ज पर अपनी बात की शुरुआत करते हैं सैयद हैदर रजा। पचास से ज्यादा साल फ्रांस (पेरिस) में गुजरने के बाद भी इस मशहूर चित्रकार पर विदेशी रंग चढ़ नहीं पाया। न बोली में, न आचार-व्यवहार में। जब कहते हैं, मैं आज भी भारतीय नागरिक हूं, तो गर्व से उनकी आंखें भी चमक उठती हैं। वह बात-बात में अपनी जन्मस्थली को याद करते हुए कहते हैं, बिना मंडला को याद किए यह आदिवासी पेरिस में जीवित नहीं रह सकेगा। साथ ही दमोह, जहां स्कूली जीवन बिताया, वह भी हर पल उनकी यादों में रहता है इसलिए हर साल, भारत आते हैं और अपने गांव जरूर जाते हैं। इस बार संकल्प लेकर आए हैं कि उस स्कूल

के बच्चों के लिए स्कॉलरशिप देनी है, जिसमें उन्होंने पढ़ाई की है। गुरु बेनीप्रसाद को शिद्द से याद करते हैं और कहते हैं, 'बच्चों को शिक्षा देना गुरु या माता का काम नहीं, हमारा भी कर्तव्य है। अपनी शाला, जिसकी छत टपकती थी, उसे सुधारवाने के लिए पिछले बरस चेक दिया था, इस साल 5 से 18 साल के बच्चों के लिए 3 स्कॉलरशिप देने का इरादा है।'

रजा बताते हैं, 'मैं लिए प्रेम महत्वपूर्ण है। ईश्वर का प्रेम, स्त्री का प्रेम और अपनी चित्रकला से प्रेम। प्रेम, पूजा और चित्रकारी में झूठ बोलें तो जीवन बेकार है। मैं उस स्त्री से आई लव यू कभी नहीं कहूंगा, जिससे थार नहीं करता। प्रेम में फल्ट मुझे स्वीकार नहीं।' भारत को दिलोजा से चाहने वाले रजा के पेरिस में बस गए, आखिर क्या वजह थी? जवाब मिलता है, 'काजर की कोठरी में कैसे ही सुहाने जाए, एक लोक काजर की लगीहं से लगीहं'।

दरअसल, जानी नाम की खूबसूरत फ्रेंच आर्टिस्ट से उन्हें प्रेम हुआ, उससे शादी भी की और पेरिस के होकर रह गए। जानी ने उन्हें चित्रकारी की बारीकियों के साथ-साथ कलाजागत की व्यावहारिकता भी सिखाई।

सैयद हैदर रजा कहते हैं, 'काम के बिना कुछ नहीं। यही मेरा प्रेम भी है। मैं जिस तरह अपनी प्रेमिका को स्पर्श करता हूं, उसी तरह कैमवास पर ब्रश भी फेरता हूं। मेरी पेंटिंग कितने में बिकेगी, किसे पसंद आएगी यह मैं कभी नहीं सोचता।'

देशी-विदेशी कलाकारों के साथ काम करते हुए रजा ने अनुभव किया, कि भारत का कलाकार अंतर्जाति (तीसरी आंख) से काम करते हैं, जबकि विदेशी, जो हमें जंगली समझते हैं, बाहरी आंखों (रेटीना) से चित्र बनाते हैं। भारतीयों का काम साधना की तरह होता है।

13/02/2007